28

बड़े बच्चों के लिए एक कहानी

2 शमूएल 24; 1 इतिहास 21

इस पाठ का शीर्षक ''बड़े बच्चों के लिए एक कहानी'' है, परन्तु यह सोने के समय सुनाई जाने वाली कहानी नहीं है। मैं चाहता हूं कि आप जागते रहें! हमारी यह कहानी 2 शमूएल 24 अध्याय में मिलती है और 1 इतिहास 21 में फिर से बताते हुए इसमें कई विवरण जोड़े गए हैं।

रोमियों 15:4 कहता है, ''जितनी बातें पहिले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिए लिखी गईं हैं कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र की शान्ति के द्वारा आशा रखें।'' पुराने नियम में लिखी गई बातें हमारे लिए नियम नहीं हैं, परन्तु उनका महत्व अवश्य है। (1) वे ''हमारी ही शिक्षा के लिए लिखी गई'' हैं। पुराने नियम की अधिकांश शिक्षा वास्तविक न होकर विवरणात्मक है, अर्थात कहानियां हैं जिनके द्वारा परमेश्वर हमें समझाना चाहता है। (2) वे हमसे ''दृढ़ प्रयत्न'' करने या सहनशील होने का आग्रह करती हैं। (3) वे हमें सांत्वना देती तथा ''प्रोत्साहित करती'' हैं। (4) वे हमें ''आशा'' अर्थात प्राण का लंगर देती हैं। 2 शमूएल 24 और 1 इतिहा०रणों का इस्तेमाल करते हुए, हम सात सच्चाइयों पर विचार करेंगे।

बड़े लोग भी पाप करते हैं (2 शमू. 24:1-10; 1 इति. 21:1-8)

बहुत सी कहानियों का आरज़्भ, ''एक बार की बात है'' से होता है। इसी फार्मूले का इस्तेमाल करते हुए, हम आरज़्भ करेंगे, ''एक बार की बात है, राजा दाऊद ने जनगणना करने का निर्णय लिया।'' बाइबल कहती है, ''सो राजा ने योआब सेनापति से जो उसकेप ास था कहा, तू दान से बेर्शेबा तक रहने वाले सब इस्राएली गोत्रों में इधर-उधर घूम, और तुम लोग प्रजा की गिनती लो, ताकि मैं जान लूं कि प्रजा की कितनी गिनती है'' (2 शमूएल 24:2)। यह कहानी दाऊद के जीवन तथा शासन के अंत के निकट घटी। इस बूढ़े आदमी ने जनगणना करने का निर्णय लिया, और गणना करके उसने पाप किया।

यह स्पष्ट नहीं है कि उसके इस कार्य को पाप ज़्यों कहा गया। अन्य समयों पर परमेश्वर

ने गिनती करने की आज्ञा दी थी; परन्तु इस बार किसी कारण, परमेश्वर की यह नहीं चाहता था। दाऊद की सेना के सेनापति, योआब को लगा कि दाऊद अहं की यात्रा पर निकला है और उसने उससे इस में से बात करने का प्रयास किया: ''प्रजा के लोग कितने ही ज़्यों न हों, तेरा परमेश्वर यहोवा उनको सौ गुणा बढ़ा दे, और मेरा प्रभु राजा इसे अपनी आंखों से देखने भी पाए; परन्तु, हे मेरे प्रभु, हे राजा, यह बात तू ज़्यों चाहता है'' (2 शमूएल 24:3)।[1] स्पष्टतया, गिनती केवल लड़ने वाले आदमियों की ही गई थी: ''तब योआब ने प्रजा की गिनती का जोड़ राजा को सुनाया; और तलवार चलाने वाले योद्धा इस्राएल के तो आठ लाख, और यहूदा के पांच लाख निकले'' (2 शमूएल 24:9)। पिछली गणनाओं के विपरीत, यह गणना लोगों को संगठित करने के लिए नहीं थी, न ही इसका कोई धार्मिक उद्देश्य था। यह केवल सैनिक उद्देश्यों के लिए थी।

सज़्भवतया यह अनुमान कि यह गणना पाप ज़्यों थी इस बात का संकेत है कि दाऊद शरीर की भुजा पर अधिक और परमेश्वर पर बहुत कम भरोसा कर रहा था। जब दाऊद केवल एक गोफन लेकर गोलियत से लड़ने गया था, तो शारीरिक सामर्थ उसकी नज़र में गौण थी। जब उसने अमालेकी सेना का सामना करने के लिए चार सौ आदमी साथ लिए थे (तुलना 2 शमूएल 30:10), तो अपनी सेना की गिनती का उसके लिए अधिक महत्व नहीं था; लगता है कि परमेश्वर की उपस्थिति अब काफी नहीं थी। वह जानना चाहता था कि वह कितने लोगों को युद्ध में भेज सकता है।

हमें यह पता चले या न कि उसका यह पाप ज़्यों था, परन्तु हमें इतना मालूम है कि यह एक पाप *था*। 1 इतिहास 21 अध्याय की पहली आयत एक महत्वपूर्ण विवरण जोड़ देती है: ''और *शैतान* ने इस्राएल के विरुद्ध उठकर, दाऊद को उकसाया कि इस्राएलियों की गिनती ले।'' परमेश्वर ने इसकी अनुमति दे दी (2 शमूएल 24:1), परन्तु उज़्साने वाला शैतान ही था।[2] आयत 7 कहती है, ''यह बात परमेश्वर को बुरी लगी।'' इसके अलावा, गिनती लगभग पूरी होने के बाद, दाऊद के मन में ऐसा कोई प्रश्न नहीं था कि उसने पाप किया है। ''प्रजा की गणना करने के बाद दाऊद का मन व्याकुल हुआ। और दाऊद ने यहोवा से कहा, यह काम जो मैं ने किया वह महापाप है'' (2 शमूएल 24:10क)।

व्यस्क भी पाप कर सकते हैं। बड़े भी शैतान की परीक्षा में आकर धोखा खा सकते हैं।

यह विचार करना अच्छा होगा कि हम जीवन में एक ऐसे स्थान पर पहुंच सकते हैं जब पाप कोई समस्या नहीं रहती, अर्थात हम इतने बुद्धिमान और परिपज़्व हों कि हम पाप के बारे में भूल जाएं; परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। अय्यूब 32:9 में गज़्भीर विचार है: ''जो बुद्धिमान हैं वे बड़े बड़े लोग ही नहीं और न्याय के समझने वाले बूढ़े ही नहीं होते।''

हम सोच सकते हैं कि शैतान की युज़्तियों को यदि कोई सह सकता है तो वह दाऊद ही है। वह ''परमेश्वर के मन के अनुसार एक पुरुष'' जो था। उसे बतशेबा के सज़्बन्ध कां भयंकर अनुभव और उसके बाद के परिणाम से पता था, और वह निजी समर्पण में मजबूत होकर बाहर निकला था। परन्तु वह प्रतिरक्षित अर्थात गलती से मुज़्त नहीं था। दाऊद अंत तक वफ़ादार रहा, परन्तु अंत तक वह चूकता भी रहा।

यह अहसास दिलाने के लिए कि हमारे जवान किस प्रकार आसानी से गिर सकते हैं, हम उन्हें परीक्षा से सावधान रहने के लिए कहते हैं। हमें यह अहसास होना आवश्यक है कि बड़े होने के बावजूद हम भी अभेद्य हैं। दाऊद के बूढ़ा हो जाने पर शैतान ने उसे शारीरिक वासना के द्वारा नहीं गिराया; उसने दाऊद को उसके मन के अहंकार के द्वारा गिराया। देश के लिए तो परिणाम इससे भी भयंकर थे।

हम में से जो लोग बूढ़े हो गए हैं उन्हें यह अहसास करना चाहिए कि हमें परीक्षा से छूट नहीं है। एक उम्र में जाकर हमें करों इत्यादि से छूट मिल सकती है, परन्तु पाप से छूट कभी नहीं मिलती। यह आज भी सच है कि जो व्यक्ति सोचता है कि वह खड़ा है उसे चाहिए कि ''वह चौकस रहे; कि कहीं गिर न पड़े'' (1 कुरिन्थियों 10:12)। यह सच है कि शैतान ''गर्जने वाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है कि किसको फाड़ खाए'' (1 पतरस 5:8)। आपकी उम्र बढ़ जाने के कारण शैतान आपका नाम और पता नहीं भूल जाता; न वह आपकी कमज़ोरियों को भूलता है (याकूब 1:14)। इसके अलावा, यह आज भी सच है कि ''पाप की मजदूरी मृत्यु है'' (रोमियों 6:23)। अगले कुछ महीनों में, मुझे वरिष्ठ नागरिकों को मिलने वाली छूट मिलने लगेगी, परन्तु वरिष्ठ नागरिकों के लिए पाप पर कोई रियायत नहीं है। उसकी मजदूरी सब के लिए बराबर है।

व्यस्कों का विवेक संवेदनशील होना आवश्यक है (2 शमू. 24:10; 1 इति. 21:7, 8)

2 शमूएल 24 में कई महान पद मिलते हैं। आयत 10 उनमें से एक है। यह आयत दिखाती है कि दाऊद को ''परमेश्वर के मन के अनुसार एक पुरुष'' क्यों कहा जाता है: ''प्रजा की गणना करने के बाद, दाऊद का मन व्याकुल हुआ। और दाऊद ने यहोवा से कहा, यह काम जो मैंने किया है वह महापाप है। तो अब, हे यहोवा, अपने दास का अधर्म दूर कर; क्योंकि मुझ से बड़ी मूर्खता हुई है।''

गणना लगभग पूरी हो चुकी थी। बिन्यामीन और लेवी के गोत्रों को छोड़ सबकी गिनती हो गई थी (1 इतिहास 21:6)। योआब ने दाऊद को तथ्य तथा आंकड़े दे दिए थे। मोटी किताब जैसी रिपोर्ट की कल्पना की जा सकती है, जिसे बनाने में 9 से अधिक महीने लगे, दाऊद के बिस्तर के पास मेज पर पड़ी थी। दाऊद ने इसे पड़ा, फिर लेट गया। परन्तु वह सो न पाया। वह मन में परेशान था। क्या गलती हो गई? उसका विवेक उसे परेशान कर रहा था। नहीं, इतना ही नहीं था। उसका विवेक तो उसे फाड़ रहा था। हमारे अनुवाद में कहा गया है कि उसका मन ''व्याकुल हुआ।'' KJV के अनुवाद में ''David's heart *smote* him'' है जिसका अर्थ है ''दाऊद के मन ने उसे *मारा*।''[3]

दाऊद एक सिद्ध मनुष्य नहीं था। उसमें भी हमारे जैसे ही कमज़ोरियां थीं। उसमें भी विवेक था। वह प्रभु के इतना निकट था कि जब उससे कोई गलती हो जाती, तो उसका विवेक उसे अकेला नहीं रहने देता था।

एक विशेष दान जो परमेश्वर हर मनुष्य को देता है वह विवेक अर्थात सही और गलत

की समझ, जो हम में से हर एक में है और जब हमें लगता है कि हमने कोई गलती की है तो यह हमें परेशान करता है, जिससे हमें *गलती* का अहसास होता है।

आज लोगों को बताया जा रहा है कि विवेक को नज़रअंदाज कर दें अर्थात सही और गलत के पुराने विचारों को त्याग दें। लोगों को समाज की नैतिकताओं या परमेश्वर के कथित नियमों का उल्लंघन करने पर बुरा न मानने के लिए कहा जाता है। दोषी होने की भावना पर विशेष तौर पर आक्रमण किया जाता है। हमें बताया जाता है, ''लज्जित होने की आवश्यकता नहीं है।'' प्रचारकों को ताड़ना की जाती है, ''लोगों को उनकी गलतियां न गिनाओ।''

हमें विवेक देने का परमेश्वर का कोई उद्देश्य था। उसने हम में से हर एक में हमारे ही भले के लिए अर्थात पाप को नापसन्द करने, और पाप करने की स्थिति में उसके लिए शर्मिंदा होकर दया और क्षमा के लिए वापस उसकी ओर आने के लिए हमें विवेक दिया है। यदि विवेक को काम करना है, तो यह संवेदनशील, कोमल तथा मिलनसार होना चाहिए।

बहुत से जवान लोगों का विवेक, जिन्हें मैं जानता हूं ऐसा ही था। संसार के साथ दिखावटी प्रेम करने और मनुष्यों तथा परमेश्वर के नियमों को तोड़ने वाले भी कभी कभी, सही हालात में अपने पापों के अपराध की भावना से परेशान होते हैं। अज़्सर मैंने जवान लोगों को बुलाए जाने पर रोते हुए आगे आते देखा है।

उम्र बढ़ने के साथ, हम लापरवाह होने लगते हैं, हमारे विवेक का यह संवेदनशील गुण खोने लगता है। हम दुनियादारी में फंसने लगते हैं। हम तर्कसंगत व्याज़्या अच्छी कर लेते हैं। जीवन के अच्छे बुरे अलग अलग क्षेत्रों के बजाय, हमारी आंखों में सब कुछ धुंधला ही दिखाई देता है। संक्षेप में, हमारा विवेक लोहे से दागा जाकर कठोर हो जाता है (1 तीमुथियुस 4:2)। आपको संदेह है ? उन लोगों पर विचार करें जिन्होंने पिछले वर्षों के दौरान अपने पापों को मानकर प्रार्थना के लिए कहा है। उनमें से कितने लोगों की उम्र तीस से कम है, और कितने लोग तीस से ऊपर के हैं ? बड़े होने के साथ हमारे विवेक को कुछ हो जाता है।

दाऊद ऐसा नहीं था। उसका विवेक अभी भी संवेदनशील था।

व्यस्कों को अपने कामों के दूरगामी परिणामों का अहसास होना आवश्यक है (2 शमू 24:11-15; 1 इति. 21:9-14)

तीसरी सच्चाई बड़े होने वाले हर व्यज़्ति के लिए गंभीर है। यीशु ने ज़ोर दिया कि अच्छा हो या बुरा हम सब एक दूसरे पर अपना प्रभाव डालते हैं (मज़्ती 5:13-16)। हम यह बात अपने बच्चों पर ज़ोर देने की कोशिश करते हैं। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि जवान लोगों को अच्छा उदाहरण पेश करे (1 तीमुथियुस 4:12)। कितने नौजवानों ने सोचा होगा, ''इससे केवल मुझे ही फर्क पड़ेगा,'' परन्तु अंत में उससे मज़्मी पापा का दिल टूटा, दूसरे लोग उनसे निराश हुए, और कई और जवान वही पाप करने लग पड़े ? केवल नौजवानों को ही यह जानना आवश्यक नहीं है। हम में से जो लोग बज़ुर्ग हैं उन्हें भी इस गंभीर सच्चाई को

मानना आवश्यक है कि एक सामान्य नियम के अनुसार, जितनी हमारी उम्र होगी उतना ही यदि हम परमेश्वर से दूर होते हैं तो लोगों को दुख होगा। 2 शमूएल 24:13 और अगली आयतों में, दाऊद के पाप की इस शृंखला से अच्छा उदाहरण नहीं है।

हमारी कहानी में दाऊद ने अपने पाप को माना और परमेश्वर से क्षमा मांगी। यह बहुत अच्छा है, परन्तु जैसा कि हमने दाऊद के जीवन का अध्ययन बड़ी बारिकी से किया है, पाप का दोष मिट जाने के बावजूद, पाप के परिणाम नहीं मिटते। ''मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा''-क्षमा मिलने के बावजूद।

मैंने टैक्ज़सस से आने से पहले एक उदाहरण देखा था। हाई स्कूल के छात्रों के एक गुट की एक घटना खबर बन गई जिन्होंने अपने सीरियन ट्रिप पर शराब पी रखी थी। अपनी गलती मान लेने के बाद, उन्हें अपने सीनियर वर्ष में कुछ सप्ताह के लिए अलग से पढ़ने के लिए कहा गया। लोग शोर मचाने लगे: ''उन्होंने अपनी गलती मान ली है; इस कारण उन्हें क्षमा कर दिया जाए। उन्हें कोई दण्ड नहीं मिलना चाहिए!'' हां, छात्रों ने गलती मान ली है, उसके लिए उनकी सराहना की जानी आवश्यक है, परन्तु उन्होंने नियम तो तोड़ा था जिसके लिए उन्हें पहले से बता दिया गया था कि इसके ये परिणाम होंगे। गलती मान लेने से परिणाम नहीं मिटाए जा सकते।

हमें इस सच्चाई को समझने की आवश्यकता है! एक पैग, अहाते में तीस मिनट का समय और परिणाम जीवन भर के!

बहुत से लोग सोचते हैं कि पाप किसी बड़ी दुकान से दूसरे डिब्बों को हिलाए बिना एक डिब्बा उठाने की तरह है। इसके बजाय, डिब्बों के बहुत बड़े ढेर के होने की कल्पना करें। फिर उस ढेर में से नीचे से एक डिब्बा उठाकर उस पूरे ढेर के ढह जाने को देखने की कल्पना करें। पाप के परिणाम ऐसे ही हैं!

आइए अपनी कहानी में चलकर 2 शमूएल 24 में बताई इस सच्चाई को देखते हैं। परमेश्वर ने आधी रात को दाऊद द्वारा अपने पाप को मान लेन की बात सुनी। अगली सुबह, परमेश्वर ने उसके पास गाद नबी को भेज दिया (आयतें 11,12क)। आपको याद होगा कि परमेश्वर ने चालीस साल पहले जंगल में दाऊद के पास गाद को भेजा था, और वह उसका आत्मिक सलाहकार बना था (1 शमूएल 22:5)। बूढ़ा होने के बावजूद, गाद राजा के लिए परमेश्वर का एक सलाहकर रहा (1 इतिहास 29:29; 2 इतिहास 29:25)।

परमेश्वर से निर्देश लेकर गाद जब दाऊद के पाया आया, तो वह प्रेम करने वाले माता पिता द्वारा अपने बच्चे को ताड़ना करने वाले के रूप में आया। वह दाऊद की, और देश की भलाई के लिए आया। दाऊद से उसके कहने का अर्थ था कि ''अपनी दवाई ले ले। अपना सबक सीख ले। और काम में लग जा।'' जैसा कि हम ने ज़ोर दिया है, परमेश्वर अपने बच्चों को ताड़ना अवश्य करता है (इब्रानियों 12:4-13)।

इस परिस्थिति की असामान्य बात यह है कि दाऊद को वह डण्डा पसन्द करने की छूट दी गई थी जिससे उसकी पिटाई होनी थी। गाद ने दाऊद को बताया, ''यहोवा यों कहता है, कि मैं तुझ को तीन विपत्तियां दिखाता हूं; उन में से एक को चुन ले, कि मैं उसे तुझ पर

डालूं'' (2 शमूएल 24:12ख)। जब आप बच्चे थे, तो आपके शिक्षक ने ताड़ना के लिए आपको पसन्द चुनने को कहा होगा: ''सप्ताह भर छुट्टी होने के बाद एक घंटा स्कूल में रुकना ... या नाक से दस लकीरें निकालना।'' दाऊद को ये विकल्प दिए गए थे।

> यहोवा यों कहता है, कि जिसको तू चाहे उसे चुन ले: या तो तीन वर्ष का काल पड़े; वा तीन महीने तक तेरे विरोधी तुझे नाश करते रहें, और तेरे शत्रुओं की तलवार तुझ पर चलती रहे; वा तीन दिन तक यहोवा की तलवार चले, अर्थात मरी देश में फैले और यहोवा का दूत इस्राएली देश में चारों ओर विनाश करता रहे ... (1 इतिहास 21:11, 12)।

इन तीन पसंदों में एक बात सामान्य है। सब ने दाऊद के पाप के मन पर आघात करना था। सब ने युद्ध की आयु वाले आदमियों की संज़्या कर करनी थी।

''दाऊद ने गाद से कहा, मैं बड़े संकट में हूं'' (2 शमूएल 24:14क)। दाऊद के पाप के कारण, बहुत से लोगों की मृत्यु होने वाली थी! यह बड़ी कड़वी गोली थी।

दाऊद ने अकाल को चयन किया। शायद उसने यह विकल्प इसलिए चुना ज़्योंकि इसी खतरे में वह दूसरों के साथ हो सकता था। बाइबल उसके इस निर्णय का कारण बताती है: ''हम यहोवा के हाथ में पड़ें, ज़्योंकि उसकी दया बड़ी है; परन्तु मनुष्य के हाथ में मैं न पडूंगा'' (2 शमूएल 24:14ख)। यदि आपको कभी मनुष्यों या परमेश्वर के हाथों में पड़ने में से किसी एक का चुनाव करना हो, तो परमेश्वर को ही चुनें। परमेश्वर धर्मी है; परमेश्वर जो कुछ भी करता है वह हमारी भलाई के लिए होता है; और, इसके बाद, परमेश्वर क्षमा कर देता है। दूसरी ओर, मनुष्य क्रूर हो सकता है। मनुष्य वही करता है जो उसे अच्छा लगता है और वह सदा के लिए ईर्ष्या रख सकता है।

''तब यहोवा इस्राएलियों में बिहान से ले ठहराए हुए समय तक मरी फैलाए रहा; और दान से लेकर बेर्शेबा तक रहने वाली प्रजा में से सज़र हज़ार पुरुष मर गए'' (2 शमूएल 24:15)। ''दान से लेकर बेर्शेबा तक'' का इलाका ही था जिसमें गणना की गई थी (2 शमूएल 24:2)। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि वह अकाल कैसा होगा जिससे इतनी जल्दी इतने लोग मारे गए, परन्तु तुरन्त मृत्यु के कारण देश दहल गया। खबर आने पर आप दाऊद के मन की पीड़ा की कल्पना नहीं कर सकते? ''सज़र हज़ार पुरुष मर गए'' कोई स्त्री नहीं, केवल पुरुष। यह लोग सज़्भवतया युद्ध में जाने की उम्र वाले थे, जिन पर दाऊद को इतना गर्व था।

यह एक आदमी के पाप के दूरगामी परिणाम का दिमाग को चक्रा देने वाला उदाहरण है।

हां, व्यस्क लोग पाप कर सकते हैं। कुछ लोग अधेड़ उम्र में पागल हो जाते हैं। कुछ जान बूझकर बचपना दिखाते हैं। परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम गैर जिज़्मेदारी से काम करके दूसरों के जीवन को प्रभावित करने के परिणाम को देख पाएं। हो सकता है कि सज़र हज़ार लोग न मरें, परन्तु हम प्रेम को मार सकते हैं, दिल तोड़ सकते हैं, विश्वास का नाश कर सकते हैं, विश्वासियों को भ्रमित कर सकते हैं, और दूसरों को परमेश्वर से मोड़कर

नाश होने का कारण बन सकते हैं।

व्यस्कों के लिए अपने हर कार्य के दूरगामी परिणाम का अहसास आवश्यक है।

व्यस्कों को अपने कामों की पूरी जिज़्मेदारी लेनी चाहिए (2 शमू. 24:16, 17; 1 इति. 21:15-17)

अपरिपज़्व लोग अपने साथ हुई किसी बात के लिए दूसरों पर आरोप लगाना चाहते हैं: ''किसी ने मुझे गिरा दिया। किसी ने मुझे नाकाम कर दिया। यदि यह, या वह हो जाता, तो मैं इस मुश्किल में न पड़ता।'' दूसरी ओर, परिपज़्व अर्थात वे लोग जो वास्तव में बड़े हो गए हैं, कह सकते हैं, ''गलती मेरी ही थी।''

आइए कहानी में चलते हैं।

> जब दूत ने यरूशलेम का नाश करने को उस पर अपना हाथ बढ़ाया, तब यहोवा वह बिपज़ि डालकर शोकित हुआ, और प्रजा के नाश करने वाले दूत से कहा, बस कर; अब अपना हाथ खींच। और यहोवा का दूत उस समय अरौना नाम एक यबूसी के खलिहान के पास था (2 शमूएल 24:16)।

मूल शास्त्र में दण्ड देने के कारण ''प्रभु पछताया।'' ''पछताना'' का अर्थ ''मन बदलना'' है। परमेश्वर का ''पश्चाताप'' (मन बदलना) हमेशा मनुष्य के पश्चाज़ाप पर निर्भर होता है। 1 इतिहास 21:16 पर ध्यान दें: दाऊद और लोगों के बज़ुर्गों ने ''टाट पहने'' जो पश्चाज़ाप का संकेत था।

''जब प्रजा का नाश करने वाला दूत दाऊद को दिखाई पड़ा, तब उसने यहोवा से कहा'' (2 शमूएल 24:17क)। 1 इतिहास 21:16 कहता है कि ''दाऊद ने ... देखा, कि यहोवा का दूत हाथ में खींची हुई और यरूशलेम के ऊपर एक बढ़ाई हुई तलवार लिए आकाश के बीच खड़ा है।'' दाऊद ने कहा, ''देख, पाप तो मैं ही ने किया, और कुटिलता मैं ही ने की है; परन्तु इन भेड़ों ने ज़्या किया है ? सो तेरा हाथ मेरे और मेरे पिता के घराने के विरुद्ध हो'' (2 शमूएल 24:17ख)। यह महान अंगीकार आयत दस के अंगीकार से मेल खाता है। दाऊद ने कहा, ''दोष तो मेरा है।'' ''भेड़ें'' दाऊद की प्रजा को अर्थात उनको कहा गया जिनकी जिज़्मेदारी उस पर थी। इसका अर्थ यह नहीं है कि लोग सिद्ध थे। 2 शमूएल 24:1 पर नज़र डालें। लोगों ने परमेश्वर का क्रोध भड़काया था।[4] स्पष्टतया विपज़ि दाऊद केलिए ही नहीं बल्कि पूरे देश को दण्ड था। दाऊद के कहने का अर्थ केवल यह था कि उस विशेष पाप के, जिसके कारण अकाल पड़ा जिज़्मेदार लोग नहीं थे।

आज की तरह, उस समय भी अगुओं के आस पास लीडर को बचाने के लिए दोष अपने ऊपर लेने वाले लोग थे। परन्तु दाऊद ने किसी शाही विशेषाधिकार का इस्तेमाल नहीं किया। उसने अपने सलाहकारों को दोष नहीं ठहराया। उसने शैतान पर आरोप नहीं लगाया (''शैतान ने मुझ से यह करवाया'')। उसने परमेश्वर पर आरोप नहीं लगाया (''आखिर, तू ने ही तो शैतान को मेरी परीक्षा *लेने दी* '')। आयत दस की तरह, उसने फिर इतना ही कहा,

''मैंने पाप किया है।''

इससे कठिन काम नहीं है। यह कहना कठिन है, ''मैंने यह किया है। मैं इतना बड़ा हो गया हूं कि मुझे पता है कि सही ज़्या है। मैंने परमेश्वर का वचन पढ़ा है। मुझे मालूम है कि ज़्या सही और ज़्या गलत है। मैं किसी और को दोषी नहीं ठहरा सकता। मैंने पाप वरन महापाप किया है। मैंने मूर्खता की है।'' ऐसे व्यस्क लोगों की जो अपने कामों की पूरी जिज़्मेदारी लें हमें कितनी आवश्यकता है!

सचमुच के व्यस्क असफल होने पर छोड़ नहीं जाते (2 शमू. 24:18, 19; 1 इति. 21:18, 19)

पांचवीं सच्चाई पिछली अर्थात चौथी के साथ जुड़ी है कि व्यस्क लोग असफल होने पर हिज़्मत नहीं हारते।

एकपल के लिए, अपने आप को उस बुजुर्ग राजा के स्थान पर रखें और अपने आप से पूछें कि आपको कैसा लगा होगा। आपने परमेश्वर की सेवा करने के प्रयास में पूरी उम्र लगा दी है। एक समय आपने भयंकर पाप किया था और बड़ी गहरी चोट खाई थी, परन्तु तब से, आप वैसा ही बनने का प्रयास कर रहे हैं जैसा परमेश्वर आपसे चाहता है। अब आप ने एक और बड़ा पाप किया है। जिसके परिणाम स्वरूप, आपकी प्रजा के सज़र हज़ार लोग मारे गए हैं। माताएं, पिता, पत्नियां और बच्चे बिलख रहे हैं। सज़र हज़ार लोगो के लिए कब्रें खोदी जा रही हैं। पूरा देश शोक में है। ज़्या आपको लगता है कि आप छोड़कर चले जाएंगे? आप ज़्या सोचते हैं, ''ज़्या फायदा है? मैं किसी काम का नहीं। मैं पापी हूं। मैं यह पद छोड़ दूंगा!''

अपरिपज़्व लोग ऐसा ही करते हैं। जब वे असफल हो जाते हैं, तो छोड़ जाते हैं।

परिपज़्व लोग हटकर होते हैं। सचमुच के व्यस्क छोड़ते नहीं हैं। दाऊद को देखें; वह परमेश्वर के सामने खड़ा, अपने लोगों के लिए बिनती कर रहा था। फिर गाद दोबारा दाऊद के पास आया और कहने लगा, ''जाकर अरौना यबूसी के खलिहान में यहोवा की एक वेदी बनवा'' (2 शमूएल 24:18)। ज़्या दाऊद ने यह जवाब दिया, ''ज़्या फायदा है? जब मुझे मालूम ही है कि मैं फिर पाप करूंगा तो इसे सुधारने का ज़्या फायदा?'' नहीं। बल्कि, वह ''यहोवा की आज्ञा के अनुसार गाद का वह वचन मानकर वहां गया'' (2 शमूएल 24:19)। परमेश्वर की दया फिर हुई और दाऊद ने आज्ञा मानी! असफल होने पर भी दाऊद परमेश्वर की इच्छा और उसके ढंग के अनुसार अपने जीवन को चलाने के लिए दृढ़ संकल्प था।

व्यस्कों को भी परमेश्वर की आज्ञा मानने की आवश्यकता है (2 शमू. 24:20-25; 1 इति. 21:20-26)

यह हमें सच्चाई की ओर लाता है कि व्यस्क होने के बावजूद परमेश्वर की आज्ञा मानने की आवश्यकता है।

हम ऐसे समय में रहते हैं जब अधिकार के प्रति सज़्मान में आम तौर पर कमी पाई

जाती है। आप में से अधिकतर लोग इस कथन से सहमत होंगे। परन्तु यह दिलचस्प है कि जब हम अधिकार के प्रति सज़्मान की आवश्यकता की बात करते हैं, तो सामान्यता हम बच्चों से ही कहते हैं, ''माता-पिता का आदर करो। अपने शिक्षकों का आदर करो। कानून का सज़्मान करो।'' इनमें से हर बात सत्य है, परन्तु इस पर विचार करें: उस अधिकार के सज़्मान की कमी का कारण बच्चे नहीं बल्कि व्यस्क लोग हैं, और इस सब का कारण परमेश्वर के अधिकार का सज़्मान न करना है।

सचमुच व्यस्क हो चुके लोगों ने यह सीख लिया है कि जीवन में उन्हें प्रतिष्ठा तथा उद्देश्य तभी मिलते हैं जब वे परमेश्वर के सामने दीन बनते और उसकी इच्छा पूरी करने के लिए उतावली करते हैं।

परमेश्वर ने दाऊद को अरौना यबूसी के खलिहान में बलिदान करने के लिए कहा था। यह वही जगह थी जहां विनाश करने वाले स्वर्गदूत को परमेश्वर ने रोका था। खलिहान सामान्यतया बाहर ऊंची जगहों पर बनाए जाते थे जहां से हवा से भूसी और धूल उड़ सके। यह विशेष खलिहान यरूशलेम के उज़र पूर्व में मौरिय्याह पहाड़ पर था (अभी शहर के भीतर नहीं था)। यह वही स्थान था जहां इब्राहीम इसहाक को बलिदान करने के लिए ले गया था। यहीं पर सुलैमान ने मन्दिर बनवाया था।

हम पज़्का नहीं जानते कि अरौना कौन था, सज़्भवतया, वह एक यहूसी प्रधान या कबायली राजा था (2 शमूएल 24:23) परन्तु यहूदी मत धारण कर लिया था। जो भी हो, उसे कनान देश में रहने और कुछ सज़्पज़ि रखने की अनुमति मिल गई थी।

जब परमेश्वर ने दाऊद को इस बलिदान के लिए कहा, तो उसने कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई। दाऊद तुरन्त उस स्थान की ओर बढ़ा। आज्ञा मानना इसी को तो कहते हैं।

पहला इतिहास 21:20 कहता है कि दाऊद के आने पर अरौना (ओर्नान) ''गेहूं दांव रहा था।''

> जब अरौना ने दृष्टि कर दाऊद को कर्मचारियों समेत अपनी ओर आते देखा, तब अरौना ने निकलकर भूमि पर मुंह के बल गिर राजा को दण्डवत की। और अरौना ने कहा, मेरा प्रज़ु राजा अपने दास के पास ज़्यों पधारा है? दाऊद ने कहा, तुझ से यह खलिहान मोल लेने आया हूं, कि यहोवा की एक वेदी बनवाऊं, इसलिए कि यह व्याधि प्रजा पर से दूर की जाए। अरौना ने दाऊद से कहा, मेरा प्रभु राजा जो कुछ उसे अच्छा लगे सो लेकर चढ़ाए; देख, होमबलि के लिए तो बैल हैं, और दांवने के लिए हथियार, और बैलों का सामान ईंधन का काम देंगे। यह सब अरौना ने राजा को दे दिया (2 शमूएल 24:20-23क)।

अरौना के लिए यह एक रोमांचकारी क्षण रहा होगा। मैंने इसके जैसे किसी घटना पर विचार करने की कोशिश की। पहले मैंने आदि रात के समय बाहर से दरवाजा खटखटाने की आवाज के बारे में सोचा। दरवाजे में लगभग आधा दर्जन अधिकारी लगने वाले आदमी, हैं, और सड़क पर एक कार खड़ी है, गाड़ी की छत के नीचे भाप बनी है। कार में देखा-

देखा सा अधिकारी बैठा है। उनमें से एक आदमी कहता है, ''अमेरिका के राष्ट्रपति क्षेत्र में एक गुप्त कार्य के सिलसिले में आए थे और उनकी कार खराब हो गई है। तुरन्त गाड़ी की व्यवस्था नहीं हो सकी।'' मैं दो तीन बार थूक निगलता हूं, फिर कहता हूं, ''आप मेरी कार की चाबी ... और मेरा क्रेडिट कार्ड रख लीजिए!''

फिर मेरे मन में दूसरा विचार आया। राष्ट्रपति की तुलना वास्तव में राजा से नहीं की जा सकती। अमेरिका में, हमारे सबसे प्रसिद्ध मनोरंजक तथा खिलाड़ी ''शाही'' लोगों के रूप में माने जाते हैं। आप उदाहरण स्वयं बनाएं। कल्पना करें कि यदि वह व्यज़्ति जिसके आप प्रसंशक हों आपसे बिनती करे तो आप ज़्या करेंगे!

अरौना ने दाऊद से कहा, ''आप ये सारी चीजें ले जा सकते हैं।[5] ये दांवने वाले बैल, आप बलिदान के लिए ले सकते हैं। सोहागा[6] और बैलों का जुआ आप आग जलाने के लिए ले जा सकते हैं।''

> राजा ने अरौना से कहा, ऐसा नहीं मैं ये वस्तुएं तुझ से अवश्य दाम देकर लूंगा; मैं अपने परमेश्वर यहोवा को सेंतमेंत के होमबलि नहीं चढ़ाने का। सो दाऊद ने खलिहान और बैलों को चांदी के पचास शेकेल में मोल लिया (2 शमूएल 24:24)।

यदि आपने अभी तक इस आयत पर निशान नहीं लगाया, तो आपको इस पर निशान लगा लेना चाहिए। अरौना की पेशकश उदार थी। परन्तु दाऊद जानता था कि बलिदान का अर्थ ज़्या होता है। यदि अरौना ही सब कुछ उपलज़्ध करवा देता तो यह अरौना का बलिदान होना था, दाऊद का नहीं! दाऊद का कथन सचमुच एक व्यस्क व्यज़्ति का कथन था। जिस धर्म के लिए कोई कीमत न चुकानी पड़े वह किसी काम का नहीं। बड़ा होने वाला व्यज़्ति मुज़्त में झूला नहीं लेना चाहता; वह अपना योगदान देना चाहता है।

परमेश्वर को बलिदान करने के संसार में तीन व्यवहार पाए जाते हैं: उदासीन व्यज़्ति कहता है, ''मैं यहोवा अपने परमेश्वर को ... भेंट नहीं दूंगा।'' अपरिपज़्व व्यज़्ति कहता है, ''मैं यहोवा अपने परमेश्वर को ऐसी भेंट नहीं दूंगा जिसके मुझे पैसे देने पड़ें।'' परिपज़्व व्यज़्ति कहता है, ''मैं यहोवा अपने परमेश्वर को ऐसी भेंट नहीं दूंगा जिसकी मुझे कीमत न चुकानी पड़े।''

सचमुच में व्यस्क लोग जानते और समझते हैं कि सच्चाई से आज्ञापालन ज़्या होता है। वे जानते हैं कि परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए समय, ऊर्जा तथा प्रयास की आवश्यकता है। वे जानते हैं कि परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए असुविधा हो सकती है। वे जानते हैं कि परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए अपनी समय सारणी बदलनी आवश्यक है। इसके अलावा वे जानते हैं कि उम्र बढ़ने के साथ परमेश्वर की आज्ञा मानने की आवश्यकता कम नहीं होती, बल्कि, यह बढ़ती ही है। वे सांसारिक काम से सेवानिवृज़ हो सकते हैं, परन्तु वे जानते हैं कि परमेश्वर की सेवा से वे सेवानिवृज़ नहीं हो सकते!

सचमुच बड़े हो जाने वाले लोग जानते हैं कि परमेश्वर की आज्ञा मानने का ज़्या अर्थ है।

व्यस्क लोग आराधना का अर्थ और महत्व समझते हैं (2 शमू. 24:25; 1 इति. 21:26-29)

व्यस्क लोग समझते हैं कि आराधना ज़्या है और उम्र के बढ़ने के साथ साथ वे इसे और प्रिय जानते हैं।

दूसरा शमूएल 24:25 बुजुर्ग राजा की अपने परमेश्वर की उपस्थिति में एक सुन्दर तस्वीर बनाता है, ''और दाऊद ने वहां यहोवा की एक वेदी बनाकर होमबलि और मेल बली चढ़ाए और यहोवा ने देश के निमिज़ बिनती सुन ली, तब वह व्याधि इस्राएल पर से दूर हो गई।'' दाऊद ने पहले उस विपज़ि को दूर करने के लिए, पाप के लिए होमबलि चढ़ाई। फिर उसने परमेश्वर से ''धन्यवाद'' कहने के लिए मेल (या संगति) बलि चढ़ाई।

1 इतिहास 21 तथा इसके अगले अध्याय इसके परिणाम को बताते हैं: परमेश्वर की ओर से उस बलिदान पर आग गिरी; विनाश करने वाले स्वर्गदूत ने अपनी तलवार मयान में रख ली; वह क्षेत्र मन्दिर के स्थान के लिए चुना गया (नोट 1 इतिहास 22:1; 2 इतिहास 3:1)–परन्तु अभी, हम एक सच्चाई पर ध्यान देते हैं। सचमुच बड़े हो जाने वाले लोग परमेश्वर की आराधना करने की अपनी आवश्यकता या इच्छा से पीछे नहीं हटते।

कभी कभी किसी बच्चे के मन में विचार आता है, ''जब मैं बड़ा हो जाऊंगा और मज़्मी पापा के अधीन नहीं रहूंगा तो बड़ा अच्छा लगेगा। फिर सप्ताह में तीन बार आराधना में आने की आवश्यकता नही होगी। एक बार ही जाना काफी होता है।'' यदि ऐसे विचार आपके मन में कभी आए हैं, तो उन लोगों को देखें जो प्रभु में और उसकी निकटता में चलते–चलते बुजुर्ग हो गए हैं। कोई उन्हें आराधना में आने को विवश नहीं करता। वे आराधना में केवल इसलिए आते है ज़्योंकि यह उनके लिए बहुत प्रिय है, और हर दिन प्रिय होती जाती है।

सारांश

आशा करता हूं कि जो हम करना चाहते थे हमने वह कर लिया है:

(1) पुराने नियम को ''हमारी शिक्षा के लिए'' इस्तेमाल करना।

(2) पुराने नियम को हमें दृढ़ बने रहने और छोड़ कर न जाने के लिए, ''दृढ़ प्रयत्न'' करना।

(3) नए नियम का इस्तेमाल हमें सांत्वना तथा ''प्रोत्साहन'' देने के लिए करना है। *आपका* पाप कोई भी ज़्यों न हो, यदि आप मन फिराते और परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं तो यह क्षमा किया जा सकता है।

(4) पुराने नियम का इस्तेमाल हमारी ''आशा'' बनाने के लिए करना है। बेशक आप सिद्ध नहीं हैं, तो भी आप परमेश्वर के मन के अनुसार एक पुरुष या स्त्री, लड़का या लड़की हो सकते हैं। यदि आपका मन परमेश्वर के साथ लगा है, तो स्वर्ग की आशा आपकी है!

व्यस्कों के लिए हमारी यही कहानी है। ज़्योंकि इसका आरज़्भ ''एक बार की बात है'' से हुआ था, इसका अंत, ''और वे ज़ुशी–खुशी रहने लगे'' से होना चाहिए। परमेश्वर द्वारा उसे क्षमा कर देने के कारण दाऊद के लिए यह सचमुच एक सुखदायक अंत था। यदि आप

यह सुनिश्चित करते हैं कि आपका जीवन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है तो आपका भी सुखदायक अंत हो सकता है।

टिप्पणियां

[1]इस तथ्य से कि दुष्ट योआब को भी लगा कि इसमें पाप है (1 इतिहास 21:3) दाऊद के दिमाग में घंटी बजनी चाहिए थी, परन्तु बजी नहीं। योआब की आपज़ि वास्तव में ज़्या थी यह स्पष्ट नहीं है। जॉन विलिस शायद सही था जब उसने कहा, "योआब यही था, परन्तु गलत उद्दश्यों के लिए" (*फर्स्ट एंड सेकंड सैमूअल* [अबिलेन, टेज़्सस: ACU प्रेस, 1987], 411, 412)। [2]"[दाऊद] कान में कही शैतान की बात सुनता है कि वह सही कर रहा है" (एल.एलन, *द कज़्युनिकेटर' स कमेंट्री : 1, 2 क्रॉनिज़्लस* [वैको, टेज़्सस: वर्ड बुज़्स, 1987], 140)। [3]NKJV में है "दाऊद के मन ने उसे दोषी ठहराया।" [4]ज़्योंकि हम नहीं जानते कि यह कहानी कहां घटी, हम नहीं जान सकते कि लोगों ने अपने "विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध भड़काने" के लिए ज़्या किया। यह कुछ ऐसा हो सकता है जिसे हम जानते हैं, जैसे अबशालोम के विद्रोह में उसका साथ देना, या कोई राष्ट्रीय भूल हो सकती है, जो लिखी नहीं गई। [5]बातचीत आरज़्भ करने का यह सामान्य ढंग था। आवश्यक नहीं कि इसका अर्थ यह हो कि अरौना को इसके बदले में कुछ पाने की उज़्मीद नहीं थी। [6]सोहागा भारी, चौड़े फट्टों से बना होता था,जिसके नीचे लोहे की पज़्यिां लगी होती थीं।